ग्रामीण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिवसिंहपुरा सीकर

सत्र 2022–2023

सर्वेक्षण कर्ता

नाम :– अंजना शर्मा

कक्षा :– M.A (final)

रोल नं. :– 22322652

सर्वेक्षण निर्देशक

डॉ. सुभाष आर्य

भूगोल विभागाध्यक्ष

पंडित दिनदयाल उपाध्याय शेखावाटी

विश्वविद्यालय, सीकर

विषय सूची

क्र. सं.	विषय क्षेत्र	पेज संख्या
1.	परिचय	3–3
2.	नामकरण	3–4
3.	स्वास्थ्य सुविधा	4–4
4	यातायात	4–5
5	अधिवास	5–5
6	खनिज संसाधन व उद्योग धंधे	5–5
7	संचार के साधन	5–6
8	परिवहन के साधन	6–6
9	उच्चावच	6–6
10	वनस्पति	7–7
11	अपवाह तंत्र	7–7
12	मृदा	7–8
13	पुशपालन	8–8
14	सिंचाई के साधन	8–9
15	भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप	9–9
16	भौगोलिक क्षेत्रफल	9–11
17	व्यापार एवं वाणिज्य	11–11
18	संचार एवं मनोरंजन के साधन	11–13
19	सामाजिक व्यवस्थाएं एवं रीति रिवाज	13–14
20	सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं	14–15
21	निष्कर्ष	15–15

1. परिचय :–

भादवासी गाँव सीकर से उत्तर दिशा में स्थित है। जिसकी सीकर से दुरी 5 किलोमीटर है यह एक ग्राम पंचायत मुख्यालय है। जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 435.24 मीटर है। वर्ष 2011 जनगणनानुसार इसकी जनसंख्या 1901 है। ग्रीष्म कालिन औसत तापमान – 46^0c से 48^0c शीतकालीन तापमान – 0^0 c से -1^0c तक पहुँच जाता है। तथा कभी–कभी पाला व बर्फ जम जाती है। भादवासी गाँव का कुल क्षेत्रफल 6369 हैक्टेयर है इसकी मातृ भाषा मारवाडी तथा राजकीय भाषा हिन्दी है भारदवासी गाँव सीकर जिले से 3.1 मिल की दूरी पर स्थित है तथा यहाँ के लोगों का सीकर मुख्यालय से प्रतिदिन आवागमन बना रहता है।

2. नामकरण :–

भादवासी गाँव राजस्थान के सीकर जिले की सीकर तहसील में स्थित है जिसमें कुल 336 परिवार निवास करते है। 2011 की जनगणना अनुसार भादवासी गाँव का आबादी 1906 है। जिसमें 962 पुरूष व 939 महिला है। भादवासी गाँव में 0–6 आयु वर्ष के बच्चों आबादी 207 है। जो गाँव की कुल आबादी का 10.89 प्रतिशत है। भादवासी गाँव का औसत लिंगानुपात 976 है। हो राजस्थान के औसत 928 से अधिक है।

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार भादवासी गाँव का लिंगअनुपात 967 है जो राजस्थान के औसत लिंगाअनुपात से कम है। चूँकी राजस्थान का औसत लिंगाअनुपात 888 है।

भादवासी गाँव में राजस्थान की तुलना में साक्षरता दर अधिक है। भादवासी की साक्षरता दर 88.33 प्रतिशत है जबकि महिला साक्षरता दर 599.37 प्रतिशत है। यह गाँव साक्षरता की दृष्टि से सीकर जिले का महत्वपूर्ण गाँव माना जाता है क्योंकि इसमें शिक्षा का स्तर अन्य गाँव की तुलना में अधिक है।

भारत के संविधान और पंचायती राज अधिनियम के अनुसारर भादवासी का प्रशासन सरपंच द्वारा किया जाता है, जो गाँव का निर्वाचित प्रतिनिधि होता

है। भादवासी गाँव लगभग 300 साल पुराना गाँव है। जिसको हीरा व दुदा नामक जाट वंश के लोगों ने बसाया था यह दोनों फगेड़िया वंश से संबंधित थे इन दोनों व्यक्तियों द्वारा इस गाँव की स्थापना भाद्रपद माह में की गई थी। इसी कारण इसका नाम भादवासी रखा गया है।

इस गाँव में लगभग फगेड़िया वंश के हिन्दू लोग रहते है तथाा मुस्लिम धर्म से संबंध रखने वाले लोगों की यहा कोई संख्या नहीं है जाट जाति के अतिरिक्त मेघवाल, खाती, सुनार, कुमावत, धाभाई, मोची, नाई, सेन इत्यादि जाति के लोग इस गाँव मे निवास करते है। परुन्त अधिकांश बाहुल्यता जाट जाति की है दुदा और हीरा गुरूकुल शिक्षा पद्धति से शिक्षा ग्रहण कर गाँव की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वास्थय सुविधा :–

इस गाँव में स्वास्थय सुविधाओं की दृष्टि में उचित व्यवस्था नहीं है केवल प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र बना हुआ है। जिसमें केवल एक नर्स कार्यरत है तथा यहाँ पर छोटी – छोटी बिमारीयों का उपचार किया जाता है और प्रतिदिन 10–15 लोग उपचार करनवाने हेतु आते है। परन्तु बड़ी–बड़ी बिमारियों के उपचार हेतु सीकर शहर में जाना पड़ता है। जहाँ पर चिकित्सा सुविधा की सभी सेवाएँ उपलब्ध है। वर्तमान में सीकर मुख्यालय पर राजकीय मेडिकल कॉलेज संचालित है जिसमें सभी प्रकार की बीमारीयों के निदान का उपचार किया जाता है।

यातायात :–

किसी भी क्षेत्र के विकास में परिवहन के साधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवहन के साधनों द्वारा किन्हीं दो स्थानों के मध्य माल व यात्री का आवागमन सम्भव होता है। वस्तुओं एवं सेवाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की प्रक्रिया को परिवहन कहते है। परिवहन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थानों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें विभिन्न वस्तुओं, पशुओं तथा

विभिन्न प्रकार की सामग्रीयों का आदान–प्रदान किया जजाता है। किसी भी क्षेत्र के विकास में परिवहन के साधनों का बड़ा योगदान होता है।

अधिवास :–

गाँव का मुख्य भाग तारानुमा अधिवास में बसा हुआ है। प्रतिफल में बसा हुआ है। गाँव के मुख्य चौक से विभिन्न गाँवों की ओर कई मार्ग निकलते है और इन मार्गो के सहारे – सहारे पक्ति बंद अधिवास पाये जाते है। वर्तमान में आधुनिक डिजाइन पर आधारित बहुमंजिली इमारते भी गाँव में पर्याप्त मात्रा में स्थित है तथा गाँव का मुख्य भाग स्तन अधिवास के रूप में अवस्थित है। चुँकि गाँव के मध्य भागों में छोटी किराणा की दुकाने, मेडिकल स्टोर, ज्वेलर्स, दुग्ध डेरी की दुकान भी स्थित है।

खनिज संसाधन व उद्योग धंधे :–

गाँव में छोटे–छोटे कुटीर उद्योग धंधे बड़े पैमाने पर पाये जाते है जिसमें सभी वर्गों के लोग संलग्न है। फर्नीचर उद्योग, लोह उद्योग के कारखाने, ज्वेलर्स की दुकाने, सीमेंट ईट उद्योग, चूड़ि उद्योग, मुर्गीपालन इत्यादि की प्रधानता पायी जाती है। इन उद्योगों द्वारा लोगों को आजीविका प्राप्त होती है। क्योंकि सीकर शहर इस गाँव के नजदीक स्थित होने के कारण इनकी खपत बड़े पैमाने पर हो जाती है। उपरोक्त उद्योगों के अतिरिक्त वर्तमान में इस गाँव में बागवानी का उद्योग बड़े पैमाने पर उभर रहा है। जिसमें सभी वर्गों के लोग जुड़े हुये है और उ़द्योग से बड़ा आर्थिक लाभ हो रहा है।

संचार के साधन :–

इस आधुनिक संचार क्रांति में सभी लोगों के पास में टेलीफॉन, मोबाईल तथाा इंटरनेट की सभी सुविधााये उपलब्ध है। लगभग हर व्यक्ति पास में छोटे बड़े सभी प्रकार के फोन उपलब्ध है तथा गाँव में BSNL, JIO इत्यादि के टॉवर उपलब्ध है। भादवासी गाँव में इंटरनेट की दृष्टि से पर्याप्त सुविधाये उपलब्ध है।

वर्तमान सभी घरो में या प्रत्येक व्यक्ति के पास पर्याप्त संचार के साधन पाये जाते है।

परिवहन के साधन :–

भादवासी गाँव सीकर से समीपस्थ स्थित होने के कारण परिवहन की दृष्टि से सभी प्रकार के साधन उपलब्ध है। परन्तु गाँव के रेलमार्ग तथा राष्ट्रीय राजमार्ग से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़ा हुआ है। परन्तु व्यक्तिगत साधनों की सभी लोगों के पास में सुविधा होने के कारण परिवहन संबंधी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ रहा है। यह गाँव सीकर से सड़क मार्ग द्वारा एवं अन्य गाँव व ढ़ाणियों से सड़क मार्ग व लिंक रोड से जुड़ा हुआ है। वर्तमान में यह नगरपालिका के अधीन आने की योजना में चिन्हित है। सामान्यतः परिवहन 3 प्रकार का माना जाता है – स्थल परिवहन, जल परिवहन तथा वायु परिवहन इत्यादि। यातायाता के साधनों में बस, ट्रक, जिप, कार, मोटरसाइकिल, ऊँट गाड़ी, बैल गाड़ी इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। यह गाँव सड़क द्वारा सीकर जिले से लिंक रोड़ के द्वारा जुड़ा हुआ है तथा सीकर से यह लगभग।

उच्चावच :–

भादवासी गाँव सीकर जिले के दक्षिण–पश्चिम दिशा में स्थित है। जहाँ पर स्थलीय भाग लगभग मैदानी भागों में फैला हुआ है। इस गाँव का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 639.69 हैक्टेयर है।

जिसका अधिकांश भाग समतल है तथा शेष भाग रेतीले टिब्बो के रूप में विस्तारित है यहाँ पर्वतीय तथा पठारी भाग का पुर्णतयाः अभाव है। जिसका प्रतिशत लगभग शून्य है पहाड़ियों का पूर्णतयः अभाव पाया जाता है तथा उच्चावत की दृष्टि से यह गाँव सामान्य श्रेणी में माना जाता है। यहाँ पर कोई विशेष भोगोलिक धरातलीय स्वरूप एवं भूगर्भिक संरक्षण की विस्तुत जानकारी से संबंधित तथ्य प्राप्त नहीं हुये है। सरयंत्र को विस्तुत जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हुई हैं।

वनस्पति :–

यहा की वनस्पति पुर्णतयाः मद्भिद तथा उष्ण कटिंबधिय पायी जाती है – कीकर, बबुल, नीम, रोहिड़ा, खेजड़ी, नागफनी, कैर, खैर इत्यादि मरूदभिद वनस्पति पर्याप्त मात्रा में देखी गयी है परन्तु इसके साथ–साथ फलदार पेड़ भी मिलते है। **जैसे** :– आम, निंबू, पपिता, अनार, चीकु, अमरूद, मौसमी इत्यादी फलदार पेड़ पर्याप्त मात्रा में पाए जाते है।

वनस्पति की दृष्टि से यहां के लोगों का आर्थिक दृष्टि को ध्यान में रखकर रूझान फलदार पेड़ों की ओर बढ़ा है।

अपवाह तंत्र :–

अध्ययन क्षेत्र में अपवाह तंत्र की दृष्टि से कोई विशेष नदी तंत्र नहीं पाया जाता। केवल ग्रीष्मकालिन मानसुन द्वारा ही यहां पर अधिकांश वर्षा होती है। तथा वर्षा का औसत लगभग 50 सेटीमीटर है। परन्तु कभी–कभी अत्याधिक वर्षा के कारण खेतों में बाढ़ जैसी स्थिति बन जाती है। आधुनिक कृषि के कारण मरूद्रभिर वनस्पति का विस्तार कम होता जा रहा है जबकि बागवान एवं फलदार वृक्षो के प्रति रूझान बढ़ता पा रहा।

शीतकालिन ऋतु से वर्षा बहुत कम मात्रा में हो पाती है जिसे मावठ के नाम से जाना जाता है जो रबि की फसल हेतु लाभदायक होती है। अपवाह तंत्र की दृष्टि से कोई विशेष अपवाह तंत्र का विकसित प्रवाह दिखाई नहीं देता है परन्तु अपवाह तंत्र की दृष्टि से भौगोलिक अपवाह तंत्र की दृष्टि से यह राजस्थान के आन्तरिक प्रवाह तंत्र का स्वरूप है।

मृदा :–

गाँव में बलुई मृदा का विस्तार सर्वाधिक मात्रा में पाया जाता है परन्तु इसके अतिरिक्त दोमट, चिकनी, रेतीली मिट्टी का भी विस्तार फैला हुआ है।

भूमि कृषि कार्य के लिये उपलब्ध बेकार भूमि 2 हैक्टेयर तथा अत्याधिक जोतने बोने योग्य बेकार बजंर भूमि 28 हैक्टेयर में फैली हुई है। यहाँ पर पुरातन

जलोढ़ मृदा का स्वरूप दिखाई देता है परन्तु इस गाँव की मिट्टी में पूर्णतः के गुण पो जाते हैं जिसके कारण फसल का उत्पादन बड़े पेमाने पर होता है।

पशुपालन :–

भादवासी गाँव मे पशुपालन व्यवसाय मध्यम वर्ग द्वारा बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। डेयरी फार्मिंग व्यवसाय यहां के लोगों का प्रमुख धंध है। पशुपालन में गाय, भैंस, बकरी, ऊँट, भेड़ इत्यादि पशुपालन पाले जा रहे है परन्तु इसके अतिरिक्त मुर्गी फार्म, डेयरी फार्म इत्यादि संचालित है जिनके माध्यम से लोगों को बड़ा आर्थिक लाभ हो रहा है। पशुपालन व डेयरी फार्मिंग इस गाँव का बहुत बड़ा आजीविका साधन है परन्तु विशेष बात यह रही है कि इस मार्ग में सभी लोग

सिंचाई के साधन :–

भादवासी गाँव में धरातली भू जल का अभाव होने के कारण फसलों को जीवित रखने के लिए सिंचाई कार्यों की आवश्यकता पड़ती है। कुएं, नलकुल सिंचाई के प्रमुख साधन है इस गाँव में नलकुपों की संख्या अधिक होने के कारण धरातलीय जल का तीव्र गति से दोहन हो रहा है। जिसके कारण भूमिगत जल स्तर तीव्र गति से गिरावट आ रही है यदि इसी प्रकार भूमिगत जल का दोहन होता है तो

तालिका संख्या 1.1

वर्ष	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010
नलकुप की संख्या	150	155	160	170	175	180	182
कुओं की संख्या	100	102	106	110	108	110	115

जब ग्रीष्म ऋतु में वर्षा कम होती है तो सिंचाई के साधनों द्वारा फसलों को सिंचित किया जाता है। भादवासी गाँव में रबि की फसल में गेहूँ, सरसों, चना, जौ, मैथी इत्यादि तथा खरीब की फसल में बाजरा, ग्वार, मोठ, मुग, चावल इत्यादि फसलों को प्रधानता से बोया जाता है।

जबकि ज्यादा फसल में ककड़ी, तुरई, टिडे, तरबुज, खरबुजा, तथा चारागाह को उगाया जाता है।

भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप :–

वास्तविक बोया गया सिंचित क्षेत्र 351 हैक्टेयर भादवासी गाँव में स्थित है। जबकि लगभग साथ में सिंचित क्षेत्र 241 हैक्टेयर है जबकि इसका सिंचित क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 592 हैक्टेयर है चूंकि असिंचित भादवासी गाँव में 127 हो तथा समय और में 153 हैक्टेयर हे एवं इसका कुल क्षेत्रफल 280 है।

तालिका नम्बर 1.2

गाँव	सिंचित	असिंचित
भादवासी	351	127
जगमालपुरा	241	153
कुल क्षेत्रफल	592	280

भौगोलिक क्षैत्रफल :–

भादवासी गाँव में जगमालपुरा का क्षेत्रफल भी सम्मिलित तथा इसका कुल क्षेत्रफल 1485 है। जिससे से भादवासी गाँव में 640 है तथा जगमालपूरा में 845 है सम्मिलित है वन तथा पहाड़ियाँ इस गाँव में नहीं पाये जाते है। उसर तथा न बौने योग्य भूमि का क्षेत्रफल भी नगण्य है अकृषि उपयोग के लिये भादवासी गाँव में 38 हैक्टेयर तथा जगमालपूरा में 54 हैक्टेयर भूमि पायी जाती है कुल अकृषि उपयोग 92 हैक्टेयर है जबकि स्थायी चारागाह भादवासी गाँव में 39 तथा जगमालपूरा में 52 है जिसका कुल भाग 91 हैक्टेयर है।

तालिका संख्या 1.3

गाँव का नाम	वन	पहाड़ीँ	उसर भूमि	अकृषि भूमि	स्थायी भूमि	क्षेत्रफल
भादवासी	0	0	0	38	39	640
जगमालपूरा	0	0	0	54	52	845
	0	0	0	92	91	1485

अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई का मुख्य साधन नलकूप है जिनकी कुल संख्या 751 है जिसमें से भादीवासी गाँव में 449 तथा जगमालपूरा में 302 है वर्तमान में इनकी संख्या में तीव गति से जजल स्तर में निरन्तर गिरावट दर्ज की जा रही है। चूंकि भादीवासी गाँव का क्षेत्रफल 640 है और इसमें नलकूपों की संख्या 449 है परन्तु जगमालपूरा में कुल क्षेत्रफल 845 हैक्टेयर है और इसमें सिंचित क्षेत्रफल 302 हैक्टेयर है।

तालिक संख्या 1.1

सिंचाई स्त्रोत	भादवासी	जगमालपूरा	कुल
नहर	0	0	0
तालाब	0	0	0
नलकूप	449	302	751

अध्ययन क्षेत्र में नलकूप भादवासी गाँव तथा जगमालपूरा में पर्याप्त संख्या पाये जाते है। जिसका सरल आरेख द्वारा रिरूपण किया जा सकता है इस आरेख के द्वारा स्पष्ट होता है कि मालीयो की ढ़ाणी में सबसे ज्यादा नलकूप है वृत्त आरेख द्वारा निरूपण किया जा सकता है :–

आरेख संख्या 1.1

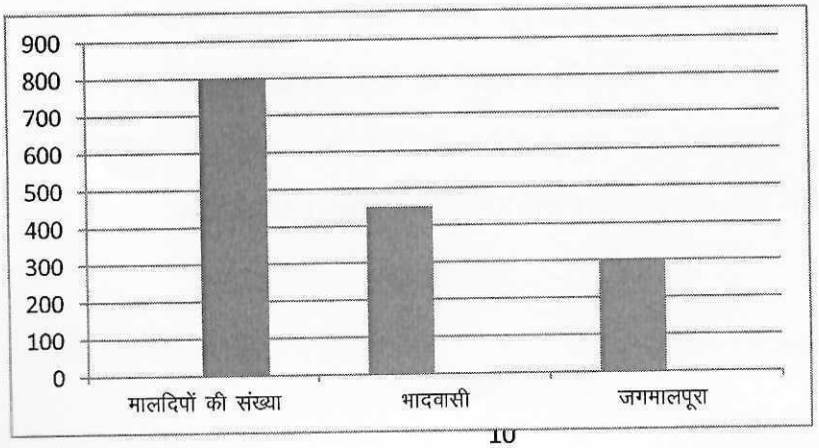

उपरोक्त आकड़ों की सहायता ये स्पष्ट होता है कि सरल दंड आरेख का निकपण किया गया है। जिसमें से जगमालुपुरा की तुलना में भादवासी गाँव में नलकूपों की संख्या अधिकतम है। उपरोक्त इन दोनों गावों में कुल मिलाकर 751 नलकुप है जिसे आदवासी गाँव में 449 व जगमालपुरा में 302 नलकूप वर्तमान समय में संचालित है।

व्यापार एंव वाणिज्य :–

भादवासी गाँव की अधिकांश जनसंख्याा द्वितीय एवं तृतीय व्यवसाय में संलग्न है पशुपालन, कृषि, बागवानी, मुर्गीफार्म आदि कार्यों आधुनिक तकनीक पर किये जाते है तथा सब्जियों का उत्पादन भी आधुनिक तकनीक पर बड़े पैमाने पर किया जजाता है जिससे भादवासी गाँव के निवासियों को बड़े पैमाने पर लाभ मिलता है जिसके कारण भादवासी गाँव के लोगों को आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ है। हॉलिस्टर नस्ल की गाय से प्रतिदिन 25–26 लीटर दूध का उत्पादन होता है यही कारण है कि इस गाँव में अधिकांश हॉलिस्टर नस्ल की गाय पाली जा सकती है। उसी प्रकार मूर्रा नस्ल की गाय की भैंसों का भी प्रयोग हुआ उत्पादन में किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त इस गाँव में स्थानिय स्तर पर छोटे–बड़े कुटीर उद्योग धंधे संचालित है। सिसे स्थानिय लोगों को बड़ा लाभ प्राप्त होता है।

संचार एवं मनोरंजजन के साधन :–

वर्तमान इस संचारर क्रान्ति के युग में संचार एवं मनोरंजन के साधनों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जा रहा है जिस प्रकार परिवहन साधनों द्वारा यात्रियों व वस्तुओं का एक स्थान से दूसरे स्थान की और आवागमन होता है उसी प्रकार उद्योग तथा व्यापारिक, सेवाओं के विकास के लिए संचार का विकसित होना अति आवश्यक है। सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान युग की महत्त्वपूर्ण सेवा बन गयी है और इसका महत्त्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

तालिका संख्या – 1 संचार एवं मनोरंजन के साधन (आदवासी)

क्रं. सं.	संचार एवं मनोरंज के साधन	उपयोग की संख्या	घरों में
1.	समाचार – पत्र	610	27%
2.	रेडियों	160	7.14%
3.	टेलिवीजन	410	18.30%
4.	फोन (लेंडलाइन) वं मोबाइल	810	36.16%
5.	कम्प्यूटर एवं इंटरनेट	250	11.16%

स्त्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण, गाँव भादवासी

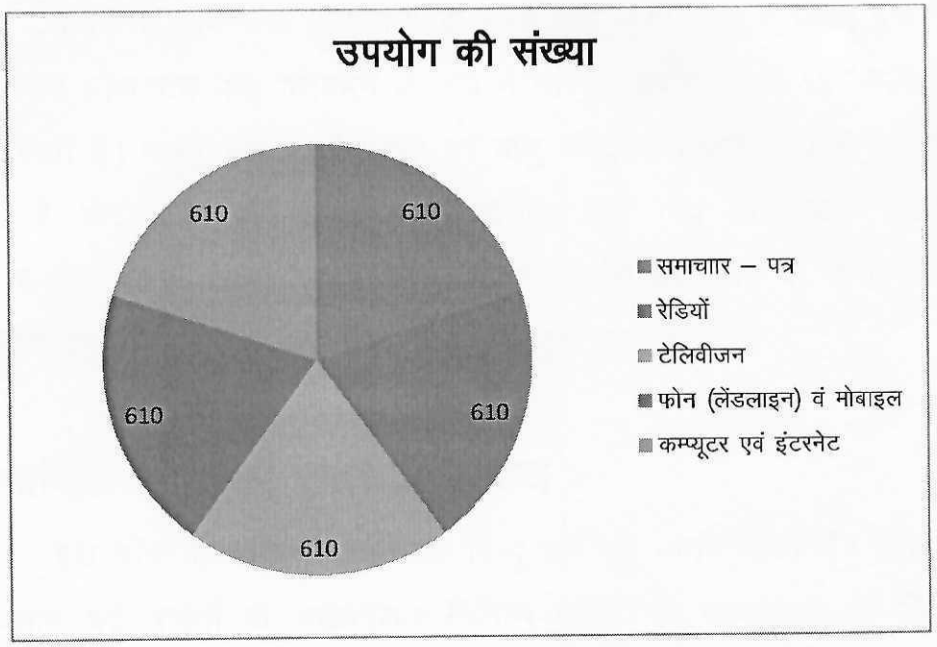

भादवासी गाँव में संचार एवं मनोरंजजन के साधनों का समुचित विकास हुआ है गाँव के लगभग सभी घरों में दैनिक पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र, रेडियों, टेलिविजन, फोन, मोबाइल, कम्प्यूटर और इंटरनेट आदि संचार एवं मनोरंजन के साधन उपलब्ध है इसके साथ ही गाँव में राजकीय डाकघर की स्थित है। जिसके द्वारा ग्रामवासी विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का लाभ ले रहे है।

5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भादवासी गाँव के पूर्व में 2 किलोमीटर पर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 गुजरता है तथा यह मार्ग भादवासी गाँव को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से जोड़ता है। भादवासी गाँव राजस्थान की राजधानी जयपुर से 123 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा जिला मुख्यालय से पांच किलोमीटर पर अवस्थित है।

भादवासी गाँव रेलमार्ग द्वारा भारत के अन्य केन्द्रों से जुड़ा हुआ है। चूंकि इस गाँव के पश्चिमी भाग से सीकर, लुहारू देहली रेलमार्ग गुजरता है। यह गाँव में कोई बड़ा रेलवे स्टेशन तो स्थित नहीं है। परन्तु जिला मुख्यालय पर स्थित रेलवे स्टेशन से यह गाँव सीधा जुड़ा हुआ है। जहां से रेलमार्ग के द्वारा यह भारत के अन्य व्यापारिक केन्द्रों से जुड़ा है।

भादवासी गाँव सीधे वायु मार्ग द्वारा तो नही जुड़ा हुआ है परन्तु इस गाँव के सबसे निकटतम वायु परिवहन के रूप में तारपुरा हवाई पट्टी 15 किलोमीटर पर स्थित है। परन्तु इस हवाई पट्टी पर वायु परिवहन सुचारू रूप से संचालित नहीं है केवल सांगानेर हवाई अड्डा जयपुर इस गाँव के सबसे नजदीक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थित है जिसके माध्यम से इस गाँव के लोग देश के विभिन्न प्रमुख नगरों एवं व्यापारिक केन्द्रों से जुड़ा हुआ है।

सामाजिक व्यवस्थाएँ एवं रीति–रिवाज :–

इस गाँव की सम्पूर्ण जनसंख्या हिन्दू धर्म को मानने वाली है। इस गाँव के लोग बड़े बुजुर्गों के आज्ञानुसार विभिन्न प्रकार की परम्पराओं का निर्वहन करते है जो सांस्कृतिक एवं सामाजिक रीति–रिवाज एवं वेशभूषा का संरक्षण गाँव के द्वारा विभिन्न सामाजिक मान्यताएँ परमपराएँ निभाई जाती है। जैसे :–

- पुत्र जन्मोत्सव मनाना।
- कुआँ पूजन करना।
- विवाह सम्बन्धित परम्पराएँ जैसे कुटूम्ब पत्रिका मन्दिर में पढ़ाना।
- शुभ कार्यों में अपने कुल देवता की पूजा व आराधना करना।
- पिता की मृत्यु पर चिता को पुत्र द्वारा मुखाग्नि देना।

- बड़े–बुजूर्गों के समान में उन्हें विभिन्न उत्सवों व समाररोह में वस्त्र एवं आभूषण प्रदान करना।

सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ :–

भादवासी गाँव में अनेक प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ विद्यमान है जिसमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है :–

1. सामाजिक समस्याएँ :–

भादवासी गाँव जिला मुख्यालय के समीप स्थित होने के कारण शिक्षा के दृष्टिकोण से अग्रणी गाँव है परन्तु फिर भी इस गाँव में कई प्रकार की कुरीतियाँ व अंधविश्वास मौजूद है जो गाँव के सामाजिक ताने–बाने को कमजोर एवं खोखला बना रही है। इसके कारण गरीब व्यक्ति और अधिक गरीब होता जा रहा है। गाँव में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है :–

- बाल–विवाह
- जाति प्रथा
- दहेज प्रथा
- मृत्यु प्रथा
- नशा व मादक पदार्थों का सेवन
- कन्या–भ्रूण हत्या
- जातिवाद एवं ऊच–नीच की भावना
- अन्ध विश्वास एवं जादू–टोना

1. आर्थिक समस्या :–

भादवासी गाँव में सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ आर्थिक समस्याएँ भी पायी जाती है जो इस गाँव के लोग की अर्थव्यवस्था को असन्तुलित करने में अपना पूर्ण योगदान देते है। इस गाँव में कई प्रकार की आर्थिक समस्याएँ पायी जाती है। जो गाँव के आर्थिक विकास में बाधक है। जिनका उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

जैसे :–

- गरीबी
- बेरोजगारी
- अशिक्षा
- रोजगार का अभाव
- निम्न जीवन स्तर
- प्रति व्यक्ति आय में कमी
- पौष्टिक आहार का अभाव
- उच्च कार्यों का अभाव

निराकरण के उपाय :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा कई योजनाएँ संचालित की गयी है जिससे लोगों की आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं में सुधार हुआ है इन ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिये जन–जागरूकता अति आवश्यक है क्योंकि जब तक गाँव तक इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। गाँव के लोगों समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं होगे तब तक इन समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। गाँव के लोगों को मिलकर इन समस्याओं का समाधान करना चाहिये। इन सभी समस्याओं का समाधान शिक्षा एवं विकास को बढ़ावा देकर किया जा सकता है।

निष्कर्ष :–

भादवासी गाँव की सम्पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर लोगों की मूलभूत समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली अनुदान व सरकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार करके लोगों को लाभार्थ करने की क्रिया व नियमों का सरलीकरण कार्य पशुपालन को माना जाता है। अतः पशुपालन एवं कृषि कार्यों को सरकारी स्तर पर विभिन्न अनुदान एवं लाभार्थ प्रदान करके लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को ऊंचा किया जा सकता है।